The Holy See

विश्व मिशन रविवार 2025 के लिए
परम पावन पोप फ्रांसिस का सन्देश

19 अक्टूबर 2025

“समस्त मानव जाति के बीच आशा के मिशनरी”

प्रिय भाइयो एवं बहनो !

जयंतीवर्ष 2025 के लिए, जिसका मुख्य संदेश आशा है**(पोप फ्रांसिस का प्रपत्र, *आशा निराश नहीं करती,1 /* Papal Bull - *Spes Non confundit, 1*), मैंने यह आदर्श वाक्य :“समस्त मानव जाति के बीच आशा के मिशनरी” चुना है। यह बपतिस्मा प्राप्त हर एक खीस्तीय एवं सम्पूर्ण कलीसिया को याद दिलाता है कि हमारी बुलाहट का आधार, येसु के पदचिह्नों पर चलकर, आशा के सन्देश वाहक और निर्माता बनना है। मैं विश्वास करता हूँ कि यह सब के लिए हमारे सत्यप्रतिज्ञ ईश्वर के साथ एक कृपा का समय होगा, जिसने हमें पुनर्जीवित खीस्त में एक जीवंत आशा के लिए नया जन्म दिया है (1पेत्रुस,1:3 – 4)। यहाँ, मैं खीस्तीय मिशनरी की पहचान के कुछ उपयुक्त पहलुओं का उल्लेख करना चाहूँगा, ताकि हम स्वयं ईश्वर के आत्मा से संचालित होकर कलीसिया में सुसमाचार प्रचार के एक नये युग के लिए पवित्र उत्साह से ओत–प्रोत हो जाएँ, जो अंधकार के बादल मंडरा रहे इस संसार में एक नयी आशा को जगाने के लिए भेजा गया है*(प्रपत्र, सभी भाई–बहनें, 9–55/ Fratelli Tutti, 9 – 55)*।**

1. खीस्त हमारी आशा के पदचिह्नों पर :

तीसरी सहस्राब्दी की प्रथम सामान्य जयंती, तत्पश्चात् पवित्र वर्ष 2000 मनाने के बाद हम अपनी दृष्टि खीस्त पर केन्द्रित करते हैं, जो हमारे इतिहास का केन्द्र हैं और जो “कल, आज और अनंत काल तक एकरूप रहते हैं

(इब्रानी, 13 : 3)। नाजरेथ के सभागृह में येसु ने घोषित किया कि धर्मग्रन्थ का कथन इतिहास में उनकी उपस्थिति के इस "आज" में पूरा हुआ। इस तरह उसने यह प्रकट किया कि यह वही हैं जो ईश्वर के राज्य के शुभ संदेश की घोषणा करने तथा सारी मानव जाति के लिए "ईश्वर के अनुग्रह का वर्ष" घोषित करने हेतु पवित्र आत्मा से अभ्यंजित होकर पिता के द्वारा भेजे गये हैं (लूकस,4:16–21)।

संसार के अंत तक रहने वाले इस रहस्यमय "आज" में सभी मनुष्यों के लिए ख्रीस्त मुक्ति की परिपूर्णता है और विशेष करके उनके लिए जिनकी ईश्वर ही एकमात्र आशा है। उनके इस सांसारिक जीवन में, "वह चारों ओर घूम–घूम कर भलाई करते रहे और शैतान के वश में आये लोगों को चंगा करते रहे" (प्रेरित, 10:38), तथा ईश्वर में लोगों की आशा पुनः स्थापित की। उन्होंने पाप को छोड़कर हमारी सारी कमजोरियों का अनुभव किया, यहाँ तक कि उन दुखद घड़ियों का भी जो उन्हें बहुत ही निराश कर सकती थीं, जैसा कि गेथसेमनी बारी में प्राणपीड़ा एवं क्रूस पर मरण संकट। येसु ने मानव जाति के लिए ईश्वर की एकमात्र मुक्ति योजना पर, जो आशा से परिपूर्ण शांति की एक भविष्य योजना है, भरोसा रख कर आज्ञाकारिता के साथ पिता ईश्वर को सब कुछ सौंप दिया (यिरमियाह, 29 : 11)। इस प्रकार वह आशा के एक दिव्य मिशनरी बन गये, जो आगामी सदियों में उन सब के लिए एक आदर्श बन गये जो उनके अपने ईश्वर प्रदत्त मिशन को पूरा करने के लिए कठिन से कठिन परीक्षाओं एवं परिस्थितियों का सामना करते हैं।

पुनर्जीवित प्रभु येसु ने अपने शिष्यों को सुसमाचार प्रचार हेतु संसार के कोने–कोने में भेजा तथा वह आध्यात्मिक रूप से उनके साथ भी रहे। इस तरह सारी मानव जाति के लिए निर्धारित आशा का मिशन प्रभु येसु अपने शिष्यों के माध्यम से आगे जारी रखते हैं। और, अब भी वह सभी गरीबों, दुखितों, निराशों एवं उत्पीड़ितों के साथ रहकर "उनके घावों पर सांत्वना का मरहम तथा आशा की अंगूरी लगाते हैं"(यूखरिस्त की अवतरणिका "भले समारी येसु")। कलीसिया, ख्रीस्त के मिशनरी शिष्यों का समुदाय, अपने प्रभु और गुरु की आज्ञा का पालन तथा उनकी सेवा का अनुकरण करते हुए अपना जीवन समस्त मानव जाति की सेवा में समर्पित करके उसी मिशन को आगे जारी रखती है। सतावटों, दुख–संकटों और कठिनाइयों का सामना करते समय, तथा उसके सदस्यों की अपनी कमियों एवं कमजोरियों में ख्रीस्त के प्रेम में दृढ़ रहने को कलीसिया प्रेरित की जाती है। साथ ही साथ, कलीसिया की मिशनरी यात्रा में ख्रीस्त के साथ संयुक्त रहकर उनके समान और उनके संग दुख झेल रही मानवता की पुकार सुनने को भी यह प्रेरित करती है, क्योंकि हर एक प्राणी की कराह एक अंतिम मुक्ति की प्रतीक्षा कर रही है। प्रभु ऐसी एक कलीसिया को ही हमेशा के लिए अपने पदचिह्नों पर चलने को बुलाती है:"एक स्थिर और गतिहीन कलीसिया को नहीं, परंतु एक मिशनरी कलीसिया को जो अपने प्रभु के साथ संसार के कोने–कोने की

गली–गलियारों में चलती रहती है" *(धर्माध्यक्षों की धर्मपरिषद की साधारण आम सभा के समापन मिस्सा में प्रवचन, 27 अक्टूबर 2024)*।

हमें भी प्रभु येसु के पदचिह्नों पर चलने को प्रेरणा मिले, ताकि हम, उनके साथ और उनमें, अपनी–अपनी जगहों में, जहाँ ईश्वर ने हमें रहने को दिया है, सभी लोगों के लिए आशा के प्रतीक एवं सन्देशवाहक बनें। ख्रीस्त के मिशनरी शिष्यों के रूप में सभी बपतिस्मा प्राप्त लोग उनकी आशा को संसार के हर एक कोने में जगमगाएँ।

2. ख्रीस्तीय, सभी राष्ट्रों के बीच आशा के सन्देशवाहक एवं निर्माता :

सभी राष्ट्रों के बीच आशा के सन्देशवाहक एवं निर्माता प्रभु ख्रीस्त का अनुगमन करते समय सभी ख्रीस्तीय उनके शुभ सन्देश को अपने सम्पर्क में आनेवालों को सुनाने, तथा उनकी ठोस जीवन परिस्थितयों में सक्रिय साझा करके आशा के सन्देशवाहक और निर्माता बनने को बुलाये गये हैं। हमारे वर्तमान समय के लोगों की "खुशियाँ और आशाएँ, दुख–तकलीफें और मनोव्यथाएँ, खासकर गरीबों और पीड़ितों की, सच्चे अर्थ में ख्रीस्त के अनुयायियों की खुशियाँ और आशाएँ, दुःख–तकलीफें और मनोव्यथाएँ ही हैं। वस्तुतः जो भी मानवीय हैं उनके हृदयों में प्रतिध्वनित हो जाते हैं" *(खुशी और उम्मीद,* 1 */ Gaudium et Spes,* 1*)*।

द्वितीय वैटिकन परिषद का यह उपर्युक्त लोक प्रसिद्ध कथन, प्रत्येक युग के समुदायों की भावनाओं एवं शैलियों को अभिव्यक्त करता, उनके सदस्यों को लगातार प्रेरित करता तथा उनके भाई–बहनों के साथ इस संसार में चलने की मदद करता है। यहाँ मैं उन सभी को याद करता हूँ जो अन्य लोगों के लिए मिशनरी हैं। प्रभु का बुलावा सुनकर आप अन्य राष्ट्रों के बीच ख्रीस्त में ईश्वर के असीम प्यार को प्रकट करने आगे बढ़े हैं। इसके लिए मैं आपको तहे दिल से धन्यवाद देता हूँ। आपका जीवन पुनर्जीवित ख्रीस्त की आज्ञा के पालन का एक स्पष्ट प्रत्युत्तर है, जिन्होंने अपने शिष्यों को सभी राष्ट्रों को सुसमाचार सुनाने भेजा (मत्ती,28:18–20)। इस तरह आप बपतिस्मा प्राप्त व्यक्ति की सार्वभौमिक बुलाहट का प्रतीक हैं जो पवित्र आत्मा की शक्ति एवं अपने दैनिक प्रयास से सारी मानव जाति के बीच मिशनरी बनने तथा प्रभु येसु के द्वारा हमें दी गयी महान आशा के साक्षी बनने के लिए चुने गये हैं।

इस आशा की व्यापकता एवं परिकल्पना इस संसार की क्षणभंगुर वस्तुओं से भी परे है, तथा यह हमें उन अलौकिक वास्तविकताओं की ओर ले जाती है, जिन्हें जानने की दैनिक प्रक्रिया में हम अब भी लगे हुए रहते हैं। संत पौल VI ने लिखा है कि वास्तव में, ख्रीस्त में मानव–मुक्ति, जिसे कलीसिया ईश्वर की असीम दया के उपहार के रूप में प्रस्तुत करती है, न केवल "अंतर्निहित, भौतिक या यहाँ तक कि आध्यात्मिक आवश्यकताओं की प्राप्ति है.... और न ही वह सांसारिक इच्छाओं, आशाओं, कार्यों तथा संघर्षों से पूरी तरह घिरी हुई होती है।

बल्कि, यह उन सारी सीमाओं से भी परे जाती है जिससे वह उस परम तत्त्व, परमेश्वर, से संयुक्त होकर परिपूर्णता में पहुँच जाए। यह मुक्ति लोकातीत एवं पारलौकिक दोनों है, जिसका प्रारंभ इस जीवन में होता है, किन्तु इसकी पूर्णता अनंतकाल में होती है" *(आधुनिक युग में सुसमाचार प्रचार, 27 / Evangelii Nuntiandi, 27)*।

इस महान आशा से उत्प्रेरित होकर, खीस्तीय समुदाय ऐसे एक संसार में एक नयी मानवता के अग्रदूत बन सकते हैं जहाँ, सब से विकसित क्षेत्रों में, गंभीर मानव संकटों के खतरे मंडरा रहे हैं, जैसे चारों ओर व्याप्त भ्रांतियाँ, अकेलापन, वयोवृद्धों की जरूरतों के प्रति उदासीनता, तथा पड़ोसियों की जरूरतों में सहायता करने में अनिच्छा इत्यादि। तकनीकी तौर पर सर्वाधिक उन्नत देशों के बीच पारस्परिक सामीप्य लुप्त होता जा रहा है : हम एक आंतरिक संबंध के बिना एक दूसरे से जुड़े हैं। अति कार्यक्षमता का जुनून, भौतिक वस्तुओं के प्रति आसक्ति एवं महत्वाकांक्षाओं से ग्रसित जीवन शैली हमें आत्म–केंद्रित और परोपकारिता में असमर्थ बनाती है। सुसमाचार, जो एक समुदाय के जीवन में अनुभव किया जाता है, हमें पुनः एक सम्पूर्ण, स्वस्थ एवं पापमुक्त मानवता में लौटा सकता है।

यही कारण है कि मैं *जयंती वर्ष के आदेश प्रपत्र* में उल्लिखित कार्यों का, खास कर सबसे गरीबों, कमजोरों, वयोवृद्धों तथा भौतिकवादी एवं उपभोगतावादी समाज से वंचित लोगों का विशेष ध्यान देते हुए, पालन करने को आमंत्रित करता हूँ। और ईश्वर की शैली में ऐसा करना : निकटता, दयालुता और कोमलता के साथ, तथा विशेष परिस्थितियों से गुजर रहे हमारे भाई–बहनों के साथ व्यक्तिगत संबंध स्थापित करना *(सुसमाचार का आनन्द, 127–128 / Evangelii Gaudium, 127–128)*। अक्सर ये ही लोग हमें सिखाते हैं कि आशा में कैसे जीना है। हम अपने व्यक्तिगत सम्पर्क के द्वारा उन्हें प्रभु के दयालु हृदय का अनुभव कराएँगे। हमें यह एहसास हो जाएगा कि "खीस्त का हृदय....सुसमाचार के प्रारंभिक प्रचार का केन्द्र बिन्दु है" *(प्रपत्र: "उसने हमसे प्यार किया," 32 / Dilexit Nos, 32)*। इस स्रोत से प्रेरित होकर हम उस विश्वास को बड़ी सुगमता के साथ पेश कर सकते हैं जो हमें ईश्वर से प्राप्त हुआ है (प्रेत्रुस, 1 : 21) तथा वही सांत्वना हम दूसरों को भी दे सकते हैं जो हमें भी ईश्वर से मिली है (2कुरिंथी,1:3–4)। येसु के मानवीय और ईश्वरीय हृदय में, ईश्वर प्रत्येक स्त्री और पुरुष के दिल से बात करना चाहता है जो हम सबको उसके असीम प्यार की ओर आकर्षित करता है। सारे संसार को अपनाकर, "हम सब इस मिशन को आगे जारी रखने हेतु भेजे गये हैं : खीस्त के हृदय तथा पिता के प्यार के प्रतीक होने" *(पोंटिफिकल मिशन सोसाइटियों की आम सभा में सहभागियों के संबोधन में अभिभाषण, 3 जून 2023)*।

3. आशा के मिशन का नवीकरण :–

आज आशा के मिशन की इस अति आवश्यकता के मद्देनजर, ख्रीस्त के शिष्य इस बात की खोज–पड़ताल करने को बुलाये गये हैं कि हम सर्वप्रथम आशा के "शिल्पकार" तथा अक्सर विचलित एवं अप्रसन्न मानवता के "पुनर्स्थापक" कैसे बन सकते हैं।

इस उद्देश्य से, हमें हर एक यूखरिस्तीय समारोह में अनुभव होनेवाली पास्का की आध्यात्मिकता में नवीनीकृत होना जरूरी है, विशेष कर पास्का का तीन दिवसीय अनुभव (Easter Treduum), जो हमारे पूजन विधि वर्ष की पराकाष्ठा है। हमें ख्रीस्त की मुक्तिदायी मृत्यु और पुनरुत्थान में बपतिस्मा दिया गया है, जो प्रभु के पास्का में एक शाश्वत वसंत ऋतु का संकेत है। फलस्वरूप, हम एक "वसंत ऋतु जनता" हैं, जिसमें सब के साथ साझा करने की आशा लबालब भरी है, क्योंकि ख्रीस्त में "हम विश्वास करते हैं और जानते हैं कि मानव के अस्तित्व में मृत्यु और नफरत अंतिम समाधान नहीं है" (धर्मशिक्षा, 23 अगस्त, 2017)। पास्का रहस्यों से, जो पूजन–पद्धति समारोहों तथा पवित्र संस्कारों में प्रकट होता है, हमें वैश्विक सुसमाचार प्रचार के विशाल क्षेत्रों में उत्साह, दृढ़ संकल्प और धीरज के साथ प्रचार कार्य करने हेतु पवित्र आत्मा से शक्ति मिलती है। "पुनर्जीवित एवं महिमान्वित ख्रीस्त हमारी आशा का स्रोत हैं तथा वह हमें अपने उस मिशन को पूरा करने की सहायता से वंचित नहीं करेंगे, जिसे उन्होंने ही हमें सौंपा है" *(सुसमाचार का आनंद, 275 / Evangelii Gaudium, 275)*। उनमें हम जीवित रहते तथा उस आशा के साक्षी बनते हैं, जो "ईश्वर का एक उपहार एवं ख्रीस्तीयों का एक कर्त्तव्य है" (आशा रात में एक रोशनी है, वेटिकन सिटी, 2014,7)।

आशा के मिशनरी प्रार्थना करनेवाली महिलाएँ और पुरुष होते हैं, क्योंकि "जो व्यक्ति आशा करता है, वह प्रार्थना करता है"। यह आदरणीय कार्डिनल फ्रांसिस जेवियर गुयेन वान युआन का वचन है जो आजीवन कारावास में भी सच्ची प्रार्थना एवं पवित्र यूखरिस्त से प्राप्त शक्ति से स्वयं दृढ़ आशा में कायम रहा (*उम्मीद की राह,* बोस्टन, 2001, 963/*The Road of Hope*)। हम यह न भूलें कि प्रार्थना ही एक मिश्नरी का सर्वप्रथम कार्यकलाप है, और ठीक उसी तरह "आशा की पहली शक्ति" भी (*धर्मशिक्षा, 20 मई 2020*)।

अतः हम अपनी आशा का मिशन प्रार्थना से आरंभ करके नवीन करें, विशेष कर ईश वचन पर आधारित प्रार्थना, इसमें भी खास कर स्तोत्र ग्रंथ, प्रार्थना का वह महान स्वर–सामंजस्य जिसका रचनाकार पवित्र आत्मा है (*धर्मशिक्षा, 19 जून, 2024*)। स्तोत्र ग्रंथ हमें दुख–तकलीफों में आशा रखने, हमारे आस–पास आशा के संकेतों को परखने, तथा निरंतर यह मिशनरी इच्छा रखने को सिखाता है कि सभी राष्ट्रों के द्वारा ईश्वर की स्तुति की जाए।

(स्तोत्र, *41 : 12, 67 : 4*)। प्रार्थना से हमारे अंदर ईश्वर द्वारा जलायी गयी आशा की किरण को हम प्रज्ज्वलित रखते हैं, ताकि वह हम में एक महान अग्नि बन जाए, जो हमारे आस–पास के हर एक को सरगर्मी प्रदान करती है, साथ–साथ उन ठोस कार्यों और संकेतों द्वारा भी जिन्हें स्वयं प्रार्थना ही प्रेरित करती है।

निष्कर्ष में, सुसमाचार प्रचार एक सामुदायिक प्रक्रिया है, जो ख्रीस्तीय आशा की तरह ही है *(आशा में बचाये गये, 14 / Spe Salvi, 14,* पोप बेनेडिक्ट **XVI***)*। यह प्रक्रिया सुसमाचार के प्रारंभिक प्रचार के साथ या बपतिस्मा के साथ समाप्त नहीं होती है, बल्कि यह सुसमाचार के मार्ग पर प्रत्येक बपतिस्मा प्राप्त ख्रीस्तीय के साथ चलकर समुदायों के निर्माण के साथ निरंतर जारी रहती है। आधुनिक समाज में, कलीसिया में सदस्यता हमेशा के लिए एक बार बपतिस्मा संस्कार द्वारा मिल गयी ऐसी बात नहीं है। यही कारण है कि ख्रीस्त में सारी मिशनरी गति–विधियों को सौंपने तथा एक सुदृढ़ विश्वास को बनाये रखने में "कलीसिया उदाहरण स्वरूप है" (*सुसमाचार का आनंद, 15 / **Evangelii Gaudium***)। अर्थात् एक कार्य को सम्पन्न करने के लिए प्रार्थना और कार्य दोनों का मिलन जरूरी है। यहाँ फिर एक बार कलीसिया की इस मिशनरी धर्मसभा के महत्त्व पर, साथ ही साथ बपतिस्मा प्राप्त ख्रीस्तीयों के मिशनरी उत्तरदायित्व को बढ़ावा देने तथा नयी विशेष कलीसियाओं के समर्थन में पोंटिफिकल मिशन सोसाइटियों द्वारा प्रदान की जा रही सेवा पर, मैं जोर देना चाहता हूँ। मैं आप सभी बच्चे–बच्चियों, युवक–युवतियों, वयस्कों, तथा वयोवृद्ध–वृद्धाओं से आग्रह करता हूँ कि आप लोग अपने जीवन–साक्ष्य और प्रार्थना, अपनी उदारता और त्याग के द्वारा कलीसिया के सुसमाचार प्रचार के इन पुनीत कार्यकलापों में सक्रिय रूप से भाग लें। इसके लिए आपका धन्यवाद।

प्रिय बहनो एवं भाइयो, हम मरियम की ओर मुड़ें, जो हमारी आशा येसु ख्रीस्त की माँ हैं। हम इस जयंती तथा आगामी वर्षों के लिए अपनी प्रार्थना माँ मरियम को सौंप दें : "ख्रीस्तीय आशा की ज्योति हर एक स्त्री और पुरुष को आलोकित करे जो समस्त मानव जाति के लिए ईश्वर के प्यार के संदेश के रूप में प्रकट हुई है। और कलीसिया संसार के हर एक कोने में इस संदेश की ईमानदार साक्षी बने" *(आशा निराश नहीं करती, 6 / Spes non confundit)*।

Rome, Saint John Lateran, 25 January 2025, Feast of the Conversion of Saint Paul, Apostle.

FRANCIS

Copyright©Dicastero per la Comunicazione – Libreria Editrice Vaticana